शांकरसम्प्रदायमठाम्नायः (संक्षिप्त)

चारमठ और अखाड़ा का परिचय :-

चारमठ - 1. श्रृङ्गेरीमठ, 2. ज्योतिर्मठ, 3. गोवर्धनमठ, 4. शारदामठ।

सात अखाड़ा - 1. जूना, 2. आवाहन, 3. अग्नि, 4. निरञ्जनी, 5. आनन्द, 6. निर्वाणी, 7. अटल।

मड़ि :-

पुरियों के 16 मड़ि होते हैं; गिरि,पर्वत,सागर के 27 मड़ि होते हैं; भारती, सरस्वती के 4 मड़ि होते हैं; तीर्थ, वन, अरण्य, आश्रम के 4 मड़ि होते हैं।

श्रृङ्गेरी से सम्बद्ध 4 मड़ियों के नाम :-

1. मन्मुकुन्द, पद्मनाभ, नरसिंह और बालविश्वनाथ। सरस्वतियों के बालविश्वनाथ है।

संन्यास के चार स्तर -

कुटिचर, बहूदक, हंस और परमहंस।

मठाम्नायः (संक्षिप्त) -

मठ	श्रृंगेरीमठ	ज्योति(जोशी)र्मठ	गोवर्धनमठ	शारदामठ
नाम	पुरी,भारती, सरस्वती	गिरि,पर्वत,सागर	वन,अरण्य	तीर्थ,आश्रम
सम्प्रदाय	(भूकाट) भूरिवार	आनन्दवार	भोगवार	कीटवार
देवता	आदिवराह	नारायण	जगन्नाथ	सिद्धेश्वर
क्षेत्र	रामेश्वर	बदरिकाश्रम	पुरुषोत्तमक्षेत्र	द्वारिका
देवी	कामाक्षी	पुण्यागिरि	विमलादेवी	भद्रकाली
महावाक्य	अहं ब्रह्मास्मि	अयमात्मा ब्रह्म	प्रज्ञानं ब्रह्म	तत्त्वमसि
वेद	यजुर्वेद	अथर्ववेद	ऋग्वेद	सामवेद
आचार्य	सुरेश्वर	त्रोटक	पद्मपाद	हस्तामलक
ब्रह्मचारी	चैतन्य	आनन्द	प्रकाश	स्वरूप
गोत्र	भूर्भुवःस्वः	भृगुः	कश्यप	अविगत
नदी	तुङ्गभद्रा	अलकनन्दा	महोनदी	गोमती
दिशा	दक्षिण	उत्तर	पूर्व	पश्चिम

	पुरी	भारती	सरस्वती
धुनी	गोपाल, अजयमेघ	दत्त	सूर्यमुखी
भाला	सूर्यप्रकाश, दत्तप्रकाश	भैरवप्रकाश	चन्द्रप्रकाश

भगवान के अङ्ग से दशनामसंन्यास कि उत्पत्ति -

ब्रह्मरन्ध्र - पुरी, ललाट - भारती, जिह्वा - सरस्वती, बाहू - गिरि, कुक्ष - पर्वत और सागर, चरण - वन, अरण्य, तीर्थ और आश्रम।

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't add this stamp.
WWW.PRINT-DRIVER.COM

चोटी का मन्त्र –

ॐ गुरु ॐ सोऽहं दियोरला ॐ गुरु ॐ सोऽहं शिष्य सोऽहं मुक्तिसारः।

भगवा का मन्त्र –

ॐ गुरु अटविनुटवि धुन धुन काटा शिवशक्ति ने किया पसारा नकछीलके भंग बनाया कर स्तुति लिङ्ग पाया घेरु पानी अचलकर पिताम्बर भेष दत्त चले देश।

रुद्राक्ष का मन्त्र –

ॐ गुरुमुखे ब्रह्मामध्ये विष्णुलिङ्गाकारं महेश्वरः पात्रे पात्रे देवानां सर्वरुद्राय नमोऽस्तुते।

झोली का मन्त्र –

ॐ गुरुजी झोली हमारा कामधेनु बसती हमारी बड़ी गुरुवचन कभी न जाय खाली मांगूँ भीख थारु ग्राम अलख पुरुष के सुमेरु नाम।

कुछ नियम –

1. नित्य प्रातः 4 बजे उठना।
2. नित्य क्रिया व स्नान करके प्रैषमन्त्र का उच्चारण करें।
3. परमहंसमन्त्र (हंसः सोऽहं परमात्माचिन्मयोऽहं सच्चिदानन्दरूपोऽहं सोऽहं ब्रह्म) और हंसगायत्रीमन्त्र (हंस हंसाय विद्महे परमहंसाय धीमहि। तन्नो हंसः प्रचोदयात्।।) का न्यूनतम 1 – 1 माला जप करवे प्रणव (ॐ) का 21600 यानि 216 माला अथवा न्यूनतम 16 जाला जप करें।
4. प्रातः स्मरणस्तोत्रं, दशशान्तिमन्त्राः, गुरुपादुकापंचकं, साधनापंचकं, भगवद्गीता (न्यूनतम 1 अध्याय) और दशोपनिषद् मूल का पाठ (न्यूनतम 4 पृष्ठ) का पाठ करने के बाद ही बालभोग ग्रहण करें। तदनन्तर नित्य स्वाध्याय (प्रस्थानत्रयी का भाष्यादि सहित न्यूनतम 2 घण्टे)। भोजन को हवन जैसे ग्रहण करें अर्थात् इष्ट देवता के मन्त्र से स्वाह का मानस उच्चारण करते हुये ग्रहण करें। सायंकाल शिव – शक्तिमहिम्नः स्तोत्र का पाठ करें।
5. संन्यास आश्रम के धर्मों को 'यतिधर्मसंग्रहः' से समझ कर यथाशक्ति और यथासंभव पालन करें।
6. शेष कुछ गुरुमुख से ही ग्रहण करने योग्य बरतें हैं जिन्हें अपने दीक्षागुरु अथवा आचार्यगुरु अथवा स्वक्षेत्रस्थ शांकरीसम प्रदाय के श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठ संन्यासधर्मपरायण विरक्त सद्गुरु से जान लेवे।

।।हरिः ॐ तत्सत्।।

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't add this stamp.
WWW.PRINT-DRIVER.COM